प्यारे बाबा ने मुझे "आयुष्मान भव" का वरदान दिया

-ब्रह्माकुमारी दादी निर्मलशान्ता, कोलाकाता

राजयोगिनी दादी निर्मलशान्ता जी का अलौकिक जन्म उस समय हुआ जब उन्होने अपने लौकिक पिता लेखराज जी को, एक अलैकिक साक्षात्कार में श्रीकृष्ण रूप में देखा उनका लोकिक सम्बन्ध अलौकिकता में बदल गया। पिताश्री जी के तन में अवतरित परमात्मा शिव ने अति मधुर तथा चित्ताकर्षक शब्दो में उन्हे जागृत किया- 'बेटी जागो, तुम्हें विश्व के कल्याण का कार्य करना है।' उनके अर्न्तचक्षु खुल गए और हृदय ने प्रभु प्रेम का अनोखा रसपान करते हुए वायदा कर लिया-'अब से लेकर आप मुझे जैसा कहेंगे वैसा ही करुँगी ।' ईश्वरीय नियम और मर्यादाओं मे ध्रुव के समान अटल, रूहानी स्नेह की साकार मूर्ति, पिताश्री जी के पदचिन्हों का अनुकरण करने वाली, नष्टोमोहा और सर्व की शुभ चिन्तक दादी जी वर्तमान समय कोलाकाता तथा भारत के पूर्वी क्षेत्र की ईश्वरीय सेवाओं की संचालिका हैं। वे प्रस्तुत कर रही हैं अपने सागरसम अनुभवों की गागर-भर झलक।

मैं अपने अन्तिम जन्म में, दादा लेखराज की लौकिक पुत्री होने का महान् भाग्य लेकर जन्मी और पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के रूप में उनका सम्पूर्ण अलौकिक परिवर्तन इन आँखों से देखने का परम सौभाग्य प्राप्त किया। लौकिक में पांच भाई-बहनों में से मैं दूसरा नम्बर हूँ। पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित निराकार परमात्मा शिव की पारलौकिक पालना से पहले के लौकिक जीवन में भी मुझे दो मात-पिता की पालना मिली। मेरी बुआ को कोई बच्चा नहीं था इसलिए बुआ फुफा ने मुझे गोद लिया था। बचपन में लौकिक पिताजी को भी मैं मामाजी कहा करती थी। लौकिक पिताजी और पुफाजी दोनों की कोलकाता में ज्वैलरी की दुकानें थीं। बड़ी होने पर मुझे मालूम पड़ गया था कि मेरे शारीरिक माता-पिता, जसोदा जी और दादा लेखराज हैं। बाद में मैं बाबा के पास रहने लगी थी।

बाबा द्वारा मिली शाही पालना

बचपन में बाबा (दादा लेखराज) ने हमें राजकुमारियों की तरह पाला था। घर में दो आया रहती थी- एक अंग्रेज और दूसरी मारवाड़ी। अंग्रेज आया तैयार करती थी और मारवाड़ी आया खाना खिलाती थी। प्यारे बाबा ने इतनी शाही पालना की पर साथ-साथ भक्ति भी खूब सिखाई। बिना पूजा के दूध भी पीने नहीं देता था। कभी-कभी विद्यालय जाने में देर हो जाती थी तो हम कहते थे कि आज पूजा नहीं करेंगे। पर बाबा झट कहता था - " पहले पूजा करो, फिर दूध मिलेगा तभी स्कूल में जाना है।"

उदार दिल बाबा के पितृस्नेह ने हमें नटखट और चुलबुला बना दिया था पर बाबा ने हमारी किसी भी शरारत पर कभी गुस्सा नहीं किया। कभी-कभी हम बाबा की गद्दी पर जाकर जान बूझकर हीरे गिराकर आते थे। फिर अगले दिन सुबह-सुबह बाबा जब विक्टोरिया पार्क में घुमाने ले जाता था तो बहाने लगाकर गद्दी पर पहूँच जाते और गिराए हुए हीरे जेब में भरकर घर आ जाते थे। बाबा को मालूम पड़ जाता था कि हीरे जेब में भरे हुए हैं। बाबा प्यार से पूछता था - " बच्चे, तुम्हारे पास कितने हीरे हैं?" हम अपनी जेब में भरे हुए २०- २५ हीरे उनको लाकर देते थे। फिर बाबा कहता था- "अच्छा बच्चे, आजकल सुनार खाली है, हम तुमको इन हीरों का गहना बनवाकर देंगे।" इस प्रकार युक्ति से हीरे ले लेता था, पर गुस्सा नहीं करता था।

दान- पुण्य के संस्कार

भक्तिकाल में बाबा के दान-पुण्य के काफी संस्कार थे। स्वयं भी दान करता था, हम बच्चों से भी कराता था। मुझे याद है कि एक बार पड़ोस में किसी गरीब कन्या की शादी थी, हमने हाथ में पड़ी सोने की चूड़ियाँ उनको दान कर दीं। फिर अपने चूड़ी रहित हाथों को फ्रक की जेब में छिपाकर घर आए ताकि किसी की नज़र नहीं पड़े। आखिर तो खाली हाथ दिख गए और मुझसे पूछा गया। मैंने कहा कि गरीब को दान कर दिया पर बाबा-माँ ने जरा भी नाराजगी व्यक्त नहीं की, और ही प्यार किया और कहा कि बच्ची के संस्कार अच्छे हैं।

खेवल पन्द्रह वर्ष की आयु में सिन्ध में एक मुखी के घर में बाबा ने हमारी शादी कर दी। लौकिक पति अधिक समय विदेश में रहता था। शादी के कुछ समय बाद ही बाबा को आलमाइटी बाबा (निराकार परमात्मा शिव) का साक्षात्कार हुआ और फिर वे एकान्तवास के लिए बनारस चले गए। वहाँ भी साक्षात्कार के द्वारा उनको असीम अतीन्द्रिय आनन्द और पूर्ण वैराग्य प्राप्त हुआ। वहाँ से लौटकर सिन्ध-हैदराबाद में अपने घर में ही सत्संग प्रारम्भ कर दिया। मैं ससुराल में रहते हुए बाबा से मिलने जाती थी और भोजन करके लौट आती थी। कभी-कभी एक या आधा दिन रुक भी जाती थी। कभी-कभी बाबा पूछता था - "बच्ची, ज्ञान नहीं सुनोगी, सत्संग नहीं करोगी? " मैं कहती थी- "जब बड़ी होऊँगी तब ज्ञान सुनूँगी।" मैं कोशिश करके सत्संग के समय न आकर उससे पहले या बाद के समय में ही ससुराल से आती थी। प्यारे बाबा के तन में अवतरित शिव पिता की पहचान उस समय तक मुझे मिली नहीं थी इसलिए मैं बाबा से, पहले की तरह ही, साधारण लौकिक वात्सल्य- भाव की कामना करती थी।

बाबा का श्रीकृष्ण रूप में साक्षात्कार

एक बार मैं बाबा से मिलने गई तो सत्संग में बहुत बहनों को अलौकिक रास करते देखा। ध्यानावस्था का यह रास बड़ा मनमोहक था। मैंने उनमें से एक का अनुभव पूछना चाहा तो उसने धीरे से कहा-"कल बताऊँगी।" क्योंकि वह मैन के अतीन्द्रिय सुख को छोड़कर वाणी में आना नहीं चाह रही थी। मुझे जानने की बहुत उत्कण्ठा थी इसलिए मैं ने बाबा को कहा–"बाबा, कल मेरे लिए गाड़ी भेज देना, मैं आऊँगी।" बाबा ने ज्ञानस्वरूप स्थिति से उत्तर दिया- "बच्ची, देखो कल क्या होता है।" ममता और मोह के स्थान पर शुद्ध ज्ञान से भरे इस उत्तर ने मुझे नाराज कर दिया और मैं ससुराल चली गई। उसी रात मुझे बाबा का श्रीकृष्ण के रूप में साक्षात्कार हुआ। मुझे अपनी नाराजगी पर पश्चाताप हुआ और यह निश्चय पक्का हो गया कि अब बाबा पहले जैसे साधारण न होकर अलौकिक हो गए हैं।

ओम मण्डली में समर्पण

इस प्रकार, होली के दिन, लौकिक जन्म देने वाले पिता के माध्यम से ही अलौकिक जन्म प्रप्त कर मैं प्रतिदिन बाबा के पास ज्ञान सुनने के लिए आने लगी। आत्मा ऐसी ज्ञान- विभोर हो जाती थी कि ज्ञान सुने बिना चैन ही नहीं आता था। प्यारे बाबा रोज गाड़ी भेज देते थे। एक दिन जब किसी कारण से गाड़ी नहीं आई तो मैं बैलगाड़ी में बैठकर बाबा से मिलने और सत्संग करने पहुँच गई। ससुराल पक्ष वाले एक व्यक्ति की नजर मुझ पर पड़ गई। बाबा ने भी हमें समझाया- " बच्ची, ऐसा नहीं करना, घर- परिवार के लोग सोचेंगे कि इतने उच्च घराने की बहू बैलगाड़ी में क्यों जा रही है?" मेरे ससुर कट्टर सिन्धी थे। पर सास के मन में प्यारे बाबा के प्रति बहुत श्रेष्ठ भावना थी, वह उन्हें भगवान का रूप मानती थी। अब पवित्रता पर झगड़ा प्रारम्भ हो गया था। इसी बीच मैंने एक बच्ची को जन्म दिया। एक बार मैं बाबा से मिलने आई थी और दंगे शुरू हो गए। मैं वापस जा न सकी और मेरी ६ मास की बच्ची अपनी दादी के पास ही रह गई। फिर तो मैं ओम मण्डली में पूरी तरह समर्पित हो गई।

"आयुष्मान भव" का वरदान

मेरी लौकिक जन्मपत्री में आयु २५ वर्ष की लिखी थी। मुझे दमे की बीमारी भी थी। प्यारे शिव बाबा ने सन्देशी बहन के द्वारा कहला भेजा कि बच्ची को बर्फ से नहलाओ, यही इसके दमे का इलाज है। मैं खुशी- खुशी तैयार हो गई परन्तु बर्फ का पानी जब डाला जाने ही वाला था तभी प्यारे बाबा ने संदेशी के द्वारा रोक दिया और मेरे सिर पर हाथ

फिराकर कहा कि बच्ची परीक्षा में पास हो गई। इस घटना के बाद बाबा ने एक अन्य सन्देश में यह रहस्य खोला कि आज्ञाकारी और निरन्तर योगी होने के कारण बच्ची की आयु बड़ गई है। बाबा का वही "आयुष्मान भव" का वरदान काम कर रहा है जो आज ८६ वर्ष तक संगम का मौजों भरा जीवन व्यतीत कर रही हूँ।

आपके कितने भाई हैं

औम् मण्डली की स्थापना के समय साकार संस्थापक होने के कारण पिताश्री ब्रह्मा बाबा के विरुद्ध, एन्टी ओम मण्डली वालों की तरफ से कई प्रकार के विघ्न डाले जाते थे। उनके विरोध का मुख्य कारण था- ओम् मण्डली में आने वाले भाई-बहनों की पवित्रता (ब्रह्मचर्य), शुद्ध-सात्विक आहार की धारण तथा कुमार-कुमारियों का आध्यात्मिक समर्पण। इस सम्बन्ध में प्यारे ब्रह्मा बाबा के विरुद्ध एक झूठी शिकायत जब उन्होंने न्यायालय में पेश की तो एक रोचक घटना घटी। चूंकि केस दादा लेखराज के नाम पर था इसलिए उन्होंने अपनी लौकिक पुत्री होने के नाते मुझे ही जज के सम्मुख प्रश्नों के उत्तर देने के लिए भेज दिया। जब मैं न्यायालय में पहुँची, तो अपने सामने एक बहन को देखकर जज के मन में प्रश्न उठा कि क्या दादा लेखराज को कोई लड़का नहीं है, जो इस बच्ची को न्यायालय में भेजा है। अपनी शंका मिटाने के लिए उन्होंने मुझसे पूछा-"बहन जी, आपके कितने भाई हैं? मैंने कोई उत्तर नहीं दिया और चुपचाप सोचने की मुद्रा में खड़ी रही। मुझे चुप देख उन्होंने मेज को जोर से थप-थपाया और पुन: पूछा-"बहन जी, आपके कितने भाई हैं?" मैंने कहा-"सोच रही हूँ, कितने बताऊँ?" मेरी इस बात पर न्यायालय में खड़े हुए सभी को हंसी आ गई परन्तु जज ने गम्भीरता से कहा- "इसमें सोचने की क्या बात है, दो-चार, पाँच, सात जितने भी हैं बता दीजिए।"

मैंने भी गम्भीर होते हुए उत्तर दिया-"जज साहब, बात यह है कि जब आप मुझे बहन जी कह रहे हैं तो एक भाई तो आप ही हो गए और ईश्वर पिता की सन्तान होने के नाते शेष आत्माएं भी मेरे भाई हैं। इस प्रकार अनगिनत भाई हो गए।" हमने आगे कहा कि यह बात मैं अपने व्यवहारिक अनुभव के आधार पर कह रही हूँ क्योंकि बाबा ने हमें विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति भ्रातृभाव धारण करने की शिक्षाएं दी हैं।

जज साहब यह सब सुनकर अन्दर तक भावुक हो गए। उन्होंने मुझे अपनी बहन स्वीकार कर लिया और यह कहकर मुकदमा खारिज कर दिया कि भाई, बहन पर मुकदमा नहीं चलाता। उसके मन में ईश्वरीय शिक्षाओं के सम्बन्ध में जो भ्रान्तियाँ विरोधियों द्वारा बिठाई गई थी, वे सब धुल गई और वह हमारे निमन्त्रण पर प्यारे बाबा से मिलने ओम् मण्डली में चला आया। इसके बाद वह ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बन गया।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com